हरिवंश राय बच्चन की लेखन शैली का अध्ययन

डॉ राजकुमार सिंह परमार
वरिष्ठ व्याख्याता हिंदी
राजकीय कन्या महाविद्यालय लालसोट
जिला दौसा राजस्थान

सार

यह हिंदी कविता, जिसे "द टैवर्न" या "द हाउस ऑफ वाइन" के नाम से जाना जाता है, एक उत्कृष्ट कृति है जो मधुशाला और शराब की खपत के रूपक के माध्यम से जीवन की क्षणिक प्रकृति, इच्छाओं और खुशी की खोज को उजागर करती है। डालता है। इसका स्थायी महत्व इसकी दार्शनिक गहराई में निहित है, क्योंकि यह लगातार बदलती दुनिया में अर्थ की खोज करने वाले व्यक्तियों के साथ प्रतिध्वनित होता रहता है। आज के तेज़-तर्रार और भौतिकवादी समाज में, कविता का वर्तमान का आनंद लेने और जीवन के विविध अनुभवों में आनंद खोजने का संदेश पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। कविता में शराब का रूपक विभिन्न प्रकार के जीवन अनुभवों का प्रतिनिधित्व करता है, जो दिमागीपन और खुशी की खोज पर आधुनिक चर्चाओं से मेल खाता है। हरिवंश राय बच्चन की काव्यात्मक भाषा और शैली समकालीन दर्शकों, प्रेरक कवियों और पाठकों को समान रूप से मंत्रमुग्ध करती रहती है। "मधुशाला" का सांस्कृतिक महत्व भी बरकरार है, इसे विभिन्न कलात्मक रूपों में मनाया जाता है और यह भारतीय साहित्यिक विरासत का एक अभिन्न अंग बनी हुई है। हिंदी में लिखे जाने के बावजूद, इसका सार्वभौमिक विषय अनुवाद होने पर इसे वैश्विक दर्शकों के लिए सुलभ और प्रासंगिक बनाता है।

परिचय

डॉ हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला और इसके मूलरूप, 'मिश्रण' के विश्लेषण के माध्यम से यह भी पता लगाने का प्रयास करूंगा कि अनुवाद ज्ञान उत्पादन का एक तरीका कैसे हो सकता है। प्रकार एडवर्ड फिट्जगेराल्ड की रुबैयत ऑफ उमर खय्याम और बच्चन द्वारा फिट्जगेराल्ड का खुद का अनुवाद खय्याम की मधुशाला के साथ संस्करण हरिवंश राय बच्चन भारतीय कवि थे, जो 20वीं सदी में भारत के सर्वाधिक प्रशिक्षित हिंदी भाषी कवियों में से एक थे । इनकी 1935 में प्रकाशित हुई लंबे लिरिक वाली कविता “मधुशाला” ने उन्हें एक अलग प्रसिद्धि दिलाई। दिल को छू जाने वाली कार्यशैली वर्तमान समय में भी हर उम्र के लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ती है। डॉ हरिवंश राय बच्चन जी ने हिंदी साहित्य में अविस्मरणीय योगदान दिया है।

जीवन परिचय

बच्चन साहब का जन्म 27 नवंबर 1907 को गांव बाबू पट्टी, ज़िला प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम प्रताप नारायण श्रीवास्तव एवं उनकी माता का नाम सरस्वती देवी था। बचपन में उनके माता-पिता उन्हें बच्चन नाम से पुकारते थे, जिसका शाब्दिक अर्थ बच्चा होता है। डॉक्टर हरिवंश राय बच्चन का शुरुआती जीवन के ग्राम बाबू पट्टी में ही बीता। हरिवंश राय बच्चन का सरनेम असल में श्रीवास्तव था, पर उनके बचपन से पुकारे जाने वाले नाम की वजह से उनका सरनेम बच्चन हो गया था।

आरंभिक जीवन

हरिवंश राय बच्चन ने कायस्थ पाठशाला में पहले उर्दू और फिर हिन्दी की शिक्षा ली जो उस समय कानून की डिग्री

के लिए पहला कदम माना जाता था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में MA और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य के विख्यात कवि डब्लू.बी. यीट्स की कविताओं पर शोध कर PhD पूरी की थी ।

1926 में 19 वर्ष की उम्र में उनका विवाह श्यामा बच्चन से हुआ था, जो उस समय 14 वर्ष की थीं। 1936 में टीबी के कारण श्यामा की मृत्यु हो गई। 5 साल बाद 1941 में बच्चन ने एक पंजाबन तेजी सूरी से विवाह किया जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थी । इसी समय उन्होंने ' नीड़ का निर्माण फिर-फिर' जैसी कविताओं की रचना की । तेजी बच्चन से अमिताभ तथा अजीताभ पुत्र हुए। अमिताभ बच्चन का प्रसिद्ध अभिनेता है । तेजी हरिवंश राय बच्चन ने शेक्सपियर के अनूदित कई नाटकों में अभिनय किया है।

1952 में हरिवंश राय बच्चन पढ़ने के लिए इंग्लैंड चले गए, जहां कैंब्रिज विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य/काव्य पर शोध किया ।1955 में कैम्ब्रिज से वापस आने के बाद भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषण के रूप में नियुक्त हो गए। हरिवशं राय बच्चन राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे है। 1976 में हरिवंश राय बच्चन को पद्मभूषण की उपाधि मिली। इससे पहले उनको 2 चट्टाने के लिए 1968 में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला था।

हरिवंश राय बच्चन की शिक्षा

इस महान साहित्यकार के शुरुआती शिक्षा अपने जिले के प्राथमिक स्कूल से हुई, उसके बाद कायस्थ पाठशाला से उर्दू की शिक्षा ली जो उनके खानदान की परंपरा भी थी। इसके बाद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में MA की पढ़ाई पूरी की। आगे चलकर अंग्रेजी साहित्य में विख्यात कवि की कविताओं पर शोध करते हुए कैंब्रिज विश्वविद्यालय इंग्लैंड में अपनी PhD की शिक्षा पूरी की।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूरी की पढ़ाई

प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद हरिवंश राय बच्चन ने सन् 1929 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से BA किया। इसके तुरंत बाद उन्होंने MA में एडमिशन ले लिया। गांधी जी का असहयोग आन्दोलन शुरू होने के कारण सन् 1930 में उन्होंने MA प्रथम वर्ष पास करने के बाद पढाई छोड़ दी, जिसे उन्होंने सन्1937-38 में पूरा किया। अंग्रेजी साहित्य के विख्यात कवि डब्लू बी यीट्स की कविताओं पर रिसर्च करने के लिए वह कैम्ब्रिज भी गए।

हरिवंश राय बच्चन के करियर की शुरुआत

हरिवंश राय बच्चन ने सन् 1941-1952 तक इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी के प्रवक्ता के रूप में काम किया। इसके साथ-साथ वह आकाशवाणी के इलाहाबाद केंद्र से भी जुड़े रहे। सिर्फ इतना ही नहीं, उन्होंने फिल्मों के लिए भी लिखने का काम किया। अमिताभ के द्वारा अभिनय किया गया एक मशहूर गीत 'रंग बरसे भीगे चुनर वाली रंग बरसे' उन्होंने ही लिखा जिसे खुद उनके बेटे अमिताभ बच्चन ने गाया। सन् 1955 में कैम्ब्रिज से लौटने के बाद उनको भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त किया गया। कहा जाता है कि श्यामा की मौत और तेजी से शादी, यही दो उनकी जिंदगी के दो महत्तवपूर्ण अंश हैं, जिनको उन्होंने अपनी कविताओं में हमेशा जगह दी। उनकी आत्मकथा 'क्या भूलूं क्या याद करूं', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर' और 'दशद्वार से सोपान' तक उनके बहुमूल्य लेखन रहे। हरिवंश राय बच्चन को सबसे बड़ी प्रसिद्धि मिली सन् 1935 में जब उनकी कविता मधुशाला छपि। इसके अलावा सन् 1966 में वह राज्य सभा के सदस्य के रूप में भी चुने गए। हरिवंश राय बच्चन को सन् 1976 में पद्म भूषण के सम्मान से नवाजा गया ।

हरिवंश राय बच्चन का कार्य क्षेत्र

1955 में इंग्लैंड से वापस आने के बाद, हरिवंश राय बच्चन ने ऑल इंडिया रेडियो में काम शुरू कर दिया। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी पढ़ाना और हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए काम करते हुए कविता लिखना जारी किया। इसके बाद कुछ 10 साल तक वे विदेश मंत्रालय से जुड़े रहे । उनको लिखने का शौक बचपन से ही था। उन्होंने फारसी कवि उम्र शाम की कविताओं का हिंदी में अनुवाद किया था। इसी बात से प्रोत्साहित होकर उन्होंने कई कृतियाँ लिखि जिनमें मधुशाला, मधुबाला, मधु कलश आदि शामिल है। उनके इस सरलता वाले काव्य को बहुत पसंद किया जाने लगा। मधुशाला ने हरिवंश राय बच्चन को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि दिलाई। हरिवंश राय बच्चन को उमर खय्याम की ही तरह शेक्सपियर, मैकबेथ और आथेलो और भगवत गीता के हिंदू के अनुवाद के लिए हमेशा याद किया जाता है। इन्होंने नवंबर 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या पर आधारित अपने अंतिम कृति लिखी थी।

हरिवंश राय बच्चन की कृतियां

इस महान कवि ने गीतों के लिए आत्मकथा, निराशा और वेदना को अपने काव्य का विषय बनाया है। उनकी सबसे प्रसिद्ध काव्य कृतियों में से निशा निमंत्रण, मिलन यामिनी, धार के इधर-उधर, मधुशाला प्रमुख है।

हरिवंश राय बच्चन की गद्य रचनाओं में क्या भूलूं क्या याद करू, टूटी छूटी कड़ियां, नीड़ का निर्माण फिर-फिर आदि श्रेष्ठ है।

मधुबाला, मधुकलश, सतरंगीनी , एकांत संगीत , निशा निमंत्रण, विकल विश्व, खादी के फूल , सूत की माला, मिलन दो चट्टानें भारती और अंगारे इत्यादि हरिवंश राय बच्चन की मुख्य कृतियाँ है।

हरिवंश राय बच्चन की उपलब्धियाँ

1968 में अपनी रचना “दो चट्टानें” कविता के लिए भारत सरकार द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

कुछ समय बाद उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और एफ्रो एसियन सम्मेलन के कमल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

उनकी सफल जीवन कथा, क्या भूलूं क्या याद रखु , नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर और दशद्वार से सोपान के लिए बिरला फाउंडेशन द्वारा सरस्वती पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

1976 मैं उनके हिंदी भाषा के विकास में अभूतपूर्व योगदान के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

हरिवंश राय बच्चन की मृत्यु

अपनी दिलकश कविताओं से लोगों का मन मोह लेने वाले इस महान कवि ने 95 वर्ष की आयु में 3 जनवरी 2003 में मुंबई में इस दुनिया को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया। हर व्यक्ति जन्म लेता है और अंत में इस दुनिया को छोड़ जाता है यह सत्य है, लेकिन कुछ लोग अपने गुणों और काम की छाप लोगों के दिलों में पर कुछ इस तरह छोड़ जाते हैं कि उन्हें हमेशा याद किया जाता है।

हरिवंश राय बच्चन की खास बातें

उन्होंने लोक धुनों पर आधारित भी कई गीत लिखे हैं, संवेदना शीलता उनकी कविता का एक विशेष गुण है।

विषय और शैली की दृष्टि की स्वाभाविकता बच्चन की कविताओं का उल्लेखनीय गुण हैं। उनकी भाषा बोल चाल की

भाषा होते हुए भी प्रभावशाली है।

बच्चन अपने बड़े बेटे अमिताभ बच्चन के फ़िल्मी जगत में जाने पर ज्यादा खुश नहीं थे, उनकी इच्छा थी कि अमिताभ बच्चन नौकरी करें।

बच्चन व्यक्तिवादी गीत, कविता के अग्रणी कवि हैं।

मधुशाला की कुछ पंक्तियां

प्यास तुझे तो, विश्व तपाकर पूर्ण निकालूँगा हाला,
एक पाँव से साकी बनकर नाचूँगा लेकर प्याला,
जीवन की मधुता तो तेरे ऊपर कब का वार चुका,
आज निछावर कर दूँगा मैं तुझ पर जग की मधुशाला।।२।
प्रियतम, तू मेरी हाला है, मैं तेरा प्यासा प्याला,
अपने को मुझमें भरकर तू बनता है पीनेवाला,
मैं तुझको छक छलका करता, मस्त मुझे पी तू होता,
एक दूसरे की हम दोनों आज परस्पर मधुशाला।।३।
भावुकता अंगूर लता से खींच कल्पना की हाला,
कवि साकी बनकर आया है भरकर कविता का प्याला,
कभी न कण-भर खाली होगा लाख पिएँ, दो लाख पिएँ!
पाठकगण हैं पीनेवाले, पुस्तक मेरी मधुशाला।।४।।

हरिवंश राय बच्चन की रचना मधुशाला

हरिवंश राय बच्चन अपने काव्य संग्रह मधुशाला के परिशिष्ट में उन लोगों की जिज्ञासा का जवाब देते है जो ये मानते हैं कि वो भी मदिराप्रेमी हैं। ये पंक्तियाँ एक कवि के रूप में उनके तेवर को बखूबी दर्शाती है। बच्चन जी ने जिस दौर में कविता लिखना शुरू किया था, वो छायावादी कविता का युग था। इस दौर की कविताएँ अतिशय सुकुमार्य और माधुर्य से परिपूर्ण थी। इन कविताओं की अतीन्द्रिय और अति वैयक्तिक सूक्ष्मता से और इसकी लक्षणात्मक अभिव्यंजनात्मक शैली से हरिवंश राय बच्चन उकता गए थे।

बच्चन जी को उर्दू की गज़लें लुभाती थी। दरअसल इन गज़लों में चमक और लचक थी जो सीधे पाठक के हृदय को स्पर्श करती थी। इस समय देश में स्वतंत्रता आंदोलन भी जोरों पर था। अंग्रेजो के अत्याचारी शासन से देश में अवसाद और खिन्नता पसरी हुई थी। इसी दौर में बच्चन साहब ने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता से परे संवेदनासिक्त अभिधा के माध्यम से काव्यात्मक प्रस्तुति दी। उनकी कविताओं में जहाँ एक तरफ गेयता है तो दूसरी तरफ इसकी भाषा एकदम सहज और जीवंत है जो पाठकों को बरबस अपना बना लेती है। उनके इस प्रयोग को हिंदी काव्यप्रेमियों ने भी खूब सराहा। देखते ही देखते हरिवंश राय बच्चन लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गए।

आत्म अनुभूति को ही काव्य का आधार बनाने वाले हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवम्बर 1907 को उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले की रानीगंज तहसील के बाबू पट्टी गाँव मे प्रताप नारायण श्रीवास्तव एवं सरस्वती देवी के यहाँ हुआ था। हरिवंश राय श्रीवास्तव को बचपन में उनके घर वाले बच्चन उपनाम से बुलाते थे। आगे चलकर यही बच्चन उपनाम

उनके मूल नाम के साथ जुड़ गया।

हरिवंश राय बच्चन ने शुरूआती शिक्षा गाँव की ही पाठशाला से ग्रहण करने के बाद उच्च शिक्षा हेतु तत्कालीन इलाहाबाद वर्तमान प्रयागराज को प्रस्थान किया। यहाँ पर उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। इसी विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में परास्नातक करने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, लंदन चले गए। यहाँ पर उन्होंने अंग्रेजी साहित्य के नामी गिरामी कवियों की कविताओं का सांगोपांग किया।

महान अंग्रेजी साहित्यकार डब्लू बी यीट्स की रचनाओं पर उन्होंने शोध कार्य भी किया। इसी शोध कार्य पर उन्होंने अपनी पीएचडी को भी पूरा किया। इस दौरान वे अध्यापन कार्य और कविताओं का लेखन भी कर रहे थे। वर्ष 1941 और वर्ष 1952 के मध्य की अवधि में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य भी किया। इसके साथ ही उन्होंने विदेश मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत हिंदी विभाग में भी कार्य किया। वर्ष 1966 में उन्हें राज्यसभा के लिए भी मनोनीत किया गया।

अगर हरिवंश राय बच्चन की काव्य यात्रा पर प्रकाश डालें तो उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति है- मधुशाला। वर्ष 1935 में प्रकाशित मधुशाला ने बच्चन जी की लोकप्रियता में चार चाँद लगा दिए। उन्होंने एक ऐसे विषय पर कविता लिखने का साहस किया जिस पर आम आदमी बातें करने से भी कतराता है। सियासी गहमागहमी के इस दौर में मधुशाला की ये काव्य पंक्तियाँ बेहद मानीखेज है

मधुशाला के सहज शिल्प की प्रेरणा उन्हें उमर खय्याम की रूबाइयों से मिली। हरिवंश राय बच्चन के पुत्र और हिंदी सिनेमा के महानायक अमिताभ बच्चन की मधुशाला के संदर्भ में दी गई ये टिप्पणी भी इस रचना की प्रासंगिकता को बताती है- मेरा मानना है कि पूरी मधुशाला सिर्फ मदिरा के बारे में नहीं अपितु जीवन के बारे में भी महीन व्याख्या करती है।

हरिवंश राय बच्चन के मधुबाला मधुशाला और मधुकलश नाम से तीन काव्य संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित हुए। हिन्दी साहित्य में इसे कहा गया है। हालांकि इस काव्य पद्धति के एकमात्र कवि हरिवंश राय बच्चन ही है क्योंकि उनकी भाँति सार्वजनीनता, आत्म केन्द्रीयता को काव्य में लाना बेहद जटिल कार्य है।

निष्कर्ष

आधुनिक काल हिन्दी साहित्य के इतिहास की परम्परा का महत्वपूर्ण युग है। हिन्दी साहित्य के इस कालखण्ड को समय की दृष्टि से आधुनिक काल और पद्य के साथ गद्य अभिर्भाव एवं प्रतिष्ठा के कारण गद्य-पद्य काल की संज्ञा से विभूषित किया जाता है। आधुनिक काल का हिन्दी साहित्य उन्नीसवीं और बीसवी शताब्दियों की राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित तथा विविध शक्तियों और प्रेरणाओं से अनुप्राणित है । ब्रिटिश शासन में पाश्चात्य सम्पर्क से नवीन शिक्षा, वैज्ञानिक आविष्कारों औद्योगीकरण आदि के प्रभाव स्वरुप देश में जो राजनीतिक धार्मिक और सामाजिक परिवर्तन घटित हुए उनकी प्रतिक्रिया स्वरुप अनेक सुधार और अभ्युत्थान सम्बन्धी आन्दोलनों का जन्म हुआ तथा समस्त देश मे पुनरुत्थान की चेतना का प्रसार हुआ । पुनुरुत्थान के समानान्तर समन्वय वृत्ति भी विकसित हुई पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान के साथ भारतवासियों ने अपनी परम्परागत आध्यत्मिकता की रक्षा की। प्राचीन की नवीन और युगानुरुप व्याख्याएं कर उसे उपयोगी बनाया गया। यह सब प्रकारान्तर से आधुनिक हिन्दी साहित्य में भी प्रतिफलित हुआ है। आधुनिक काल की प्रारम्भ तिथि के सम्बन्ध में विद्वानों में अतैक्य नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

डॉ. स्नेह लता शर्माः आत्मकथाकार बच्चन, पृ. 4

पुष्पा भारती (संपादक): हरिवंशराय बच्चन की साहित्य साधना, पृ. 114

डाँ. नरेन्द्र देव वर्माः प्रगीतकार बच्चन और अंचल, पृ. 37

डाँ. इन्दूबाला दीवान : बच्चन अनुभूति और अभिव्यक्ति, पृ.

अनिल राकेशी: छायावादोत्तर कविता में समाज समीक्षा, पृ. 273

डॉ. स्नेह लता शर्माः आत्मकथाकार बच्चन, पृ. 77

बच्चन: क्या भूलूँ क्या याद करूँ, पृ. 25

बच्चन: क्या भूलूँ क्या याद करूँ, पृ. 175

बच्चन : नीड़ का निर्माण फिर, पृ. 21

बच्चन : नीड़ का निर्माण फिर, पृ. 231

पुष्पा भारती (संपादक): हरिवंशराय बच्चन की साहित्य साधना, पृ. 232

बच्चनः बसेरे से दूर, पृ. 60

बच्चनः बसेरे से दूर, पृ. 172

बच्चनः 'दशद्वार' से 'सोपान' तक, पृ. 265

बच्चन : नीड़ का निर्माण फिर, पृ. 208

बच्चनः 'दशद्वार' से 'सोपान' तक, पृ. 43

डाँ. इन्दूबाला दीवान : बच्चन अनुभूति और अभिव्यक्ति, पृ. 21-22

बच्चन : टूटी- छूटी कड़ियाँ, पृ. 74

बच्चन : क्या भूलूँ क्या याद करूँ, पृ. 26

डॉ0 हरिवंश राय बच्चन बसेरे से दूर पृष्ठ- 136, राजपाल एण्ड संस1969 |

दैनिक भास्कर 20 जनवरी 2003, पृष्ठ-11

भगवती चरण वर्मा ये सात और हम पृष्ठ- 107 राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली - 7 1965 सं० ।

मधुशाला के सर्वप्रथम श्रोता का संस्मरण मधुशाला पृष्ठ-85-86 हिन्द पाकेट बुक्स प्रा०लि० दिल्ली 1966 सं0

भगवती चरण वर्मा ये सात और हम पृष्ठ- 107 राधाकृष्ण प्रकाशन

मधुशाला के सर्वप्रथम श्रोता मुक्त जी का संस्मरण मधुशाला पृ0 86 1

मुक्त जी का संस्मरण मधुशाला पृष्ठ- 86